बाबा मुक्तानन्द की प्रथम विश्वयात्रा की ५०वीं वर्षगाँठ

परिचय : स्वामी ईश्वरानन्द

२१ अगस्त, २०२०, सिद्धयोग पथ पर एक ऐतिहासिक घटना को दर्शाता है : बाबा मुक्तानन्द की प्रथम विश्वयात्रा की ५०वीं वर्षगाँठ। यह उन तीन विश्वयात्राओं में से प्रथम यात्रा थी जिसके दौरान बाबा जी ने सिद्धयोग की सिखावनियों व अभ्यासों को विश्वभर में साधकों तक पहुँचाया तथा शक्तिपात दीक्षा द्वारा हज़ारों-लाखों लोगों को उनकी अपनी अन्तर-दिव्यता के प्रति जागृत किया। प्रथम विश्वयात्रा कैसे शुरू हुई व कैसे उसका विकास हुआ, यह एक ऐसी कहानी है जो दैवी कृपा से, बाबा जी के प्रेम से और अनेकानेक उदारमना लोगों के सद्भाव से भरी हुई है।

१२ मई, १९७० की सुबह, गुरुदेव सिद्धपीठ में बाबा जी ने आश्रम में कुछ सिद्धयोगियों को बड़े हर्षपूर्वक यह बताया कि भोर के समय उन्हें अपने श्रीगुरु, भगवान नित्यानन्द के दर्शन हुए जिन्होंने नौ वर्ष पूर्व महासमाधि ले ली थी। बाबा जी ने बताया कि उन्हें गुरुचौक में भगवान नित्यानन्द के दर्शन हुए जो आनन्दोन्मत्त होकर नृत्य कर रहे थे, और यह कि उन्हें बड़े बाबा जी से यह अन्तर-आदेश प्राप्त हुआ कि वे विदेशयात्रा कर संसार को सिद्धयोग की सिखावनियों के विषय में बताएँ।

अतः, तीन माह पश्चात्, २१ अगस्त, १९७० को बाबा जी ने मुम्बई के अन्तर्राष्ट्रीय हवाईअड्डे से, पाँच भक्तों के एक समूह के साथ तीन माह की यात्रा के लिए प्रस्थान किया जो कि बाबा जी की प्रथम विश्वयात्रा कहलाई जाने वाली थी।

अगले १०१ दिनों तक, बाबा जी यात्रा करते रहे और पश्चिमी देशों में उन्होंने ९० प्रवचन दिए—इटली, स्विट्ज़रलैन्ड, इंग्लैन्ड, फ़्रांस, अमरीका, ऑस्ट्रेलिया तथा सिंगापुर में। उनके साथ जाने वालों ने बताया कि बाबा जी जब तक जगे रहते, उस समय के प्रत्येक क्षण का उपयोग उन्होंने सत्संगों व प्रश्नोत्तरी-सत्रों के आयोजन में, प्रवचन देने, लोगों को संकीर्तन व ध्यान करना सिखाने में, भक्तों से मिलने, लोगों के घरों में जाकर उनसे भेंट करने में और दो या तीन दिवसीय आध्यात्मिक रिट्रीट के आयोजनों में बिताया। इन सभी गतिविधियों द्वारा बाबा जी सतत अपनी कृपा बरसाते रहे, दर्शन देते रहे और लोगों का मार्गदर्शन करते रहे जिससे वे अन्तर्मुख होकर अपनी अन्तर-आत्मा की दिव्यता को जानें।

पश्चिमी देशों की इस यात्रा के पूर्व, बाबा जी ने भारत भर में व्यापक रूप से यात्राएँ कर सहस्रों लोगों को सिद्धयोग की सिखावनियाँ व अपनी कृपा प्रदान की थी। १९६० के मध्य व बाद के वर्षों में जब पश्चिमी देशों के जिज्ञासुओं ने एक सद्गुरु की खोज में भारत आना शुरू किया तो बाबा जी

की महानता व शक्तिपात प्रदान करने की उनकी सामर्थ्य के बारे में सुनकर, उनमें से अनेक ने बाबा जी के आश्रम को खोज लिया।

गुरुदेव सिद्धपीठ में अपने प्रवास के दौरान, इन साधकों ने अपने आप को आश्रम के दैनिक कार्यक्रमों में पूरी तरह तल्लीन कर लिया, बाबा जी की कृपा से आध्यात्मिक जागृति पाई व गहन रूपान्तरण की अनुभूति की। आश्रम से जाते समय उनमें से अनेक लोगों ने बाबा जी को अपने-अपने देश आने का आमन्त्रण दिया, क्योंकि वे एक सच्चे आध्यात्मिक गुरु का परिचय अपने परिवारों व मित्रों से करवाना चाहते थे और उन्हें वह सब बताना चाहते थे जो उन्होंने बाबा जी से पाया था। अतः जब यह ख़बर फैली कि बाबा जी पश्चिमी देशों की यात्रा करने वाले हैं तो इन्हीं भक्तों में से बहुतों ने आगे बढ़कर अपने-अपने देश में बाबा जी के दौरे में मदद की।

प्रथम विश्वयात्रा की एक अविस्मरणीय विशेषता थी, इसका सहज व स्वतःस्फूर्त स्वरूप। जो भी परिस्थिति सामने आती, बाबा जी उसे सिखाने व कृपा प्रदान करने के एक अवसर में बदल देते। रोम में बाबा जी के प्रवास के दौरान मौजूद रहे एक सज्जन, यात्रा के इस प्रथम पड़ाव के वातावरण का वर्णन इस प्रकार करते हैं :

> वह वातावरण बहुत ही आत्मीय था। हमें ऐसा लग रहा था कि हम एक परिवार हैं और बाबा जी को आस-पास के गिरिजाघर व बड़ी-बड़ी इमारतें दिखा रहे हैं। सत्संग अपने आप ही होते—बाबा जी बस बैठ जाते और प्रवचन व संकीर्तन करने लगते और उसके बाद लोगों से मिलते। हमें बिलकुल मालूम नहीं होता कि अगले दिन क्या होने वाला है। कोई बाबा जी से मिलता और फिर उन्हें किसी स्थान पर आने का निमन्त्रण दे देता। और वे वहाँ चले जाते।

बाबा जी जहाँ भी जाते, समय निकालकर व्यक्तिगत रूप से लोगों से मिलते, उनके साथ समय बिताते। सत्संग का समापन हो अथवा वे अनौपचारिक रूप से लोगों से मिल रहे हों, दर्शन देते समय बाबा जी अत्यन्त प्रेम से हर व्यक्ति का स्वागत करते और उनसे मिलने की अपनी ख़ुशी को अभिव्यक्त करते। साथ ही बाबा जी सभी को प्रोत्साहित करते कि वे अन्तर्मुख होकर स्वयं अपनी अन्तरात्मा की महानता की अनुभूति करें।

बाबा जी से मात्र एक ही बार मिलने पर, लोग अपने बारे में एक नई समझ लेकर वहाँ से लौटते और उनमें ध्यान करने की एक नई रुचि जगती, और फिर वे बाबा जी के सान्निध्य में रहने से प्राप्त अपने असाधारण अनुभवों व अन्तर्दृष्टियों के विषय में अपने मित्रों को बताते। इस प्रकार, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक, एक हृदय से दूसरे हृदय तक, एक-दूसरे को बताते-बताते, पूरी यात्रा के दौरान लोग बाबा जी के साथ सत्संग में आने लगे।

अनेक पड़ावों पर बाबा जी ने महाविद्यालयों, गिरिजाघरों, या अन्य शिक्षण संस्थाओं में सत्संग किए। पादरी, मन्त्री, रब्बी [यहूदी धर्मगुरु], विभिन्न योग-संस्थाओं व आध्यात्मिक संस्थाओं के प्रमुख, पूर्वीय दर्शन के प्रोफ़ेसर तथा हर आयुवर्ग के विद्यार्थी—जो भी लोग प्रत्यक्ष रूप से एक आत्मसाक्षात्कारी गुरु से योग के रहस्यों के बारे में जानना चाहते थे, वे इन सत्संगों में आते।

हर सत्संग में पूरा हॉल बाबा जी की असीम शक्ति से ओतप्रोत हो जाता, इससे एक माधुर्यपूर्ण वातावरण का निर्माण होता और लोग अपने हृदय से जुड़ जाते। उदाहरणार्थ, बॉस्टन में बाबा जी ने श्रोतागण के रूप में उपस्थित, नौ महाविद्यालयों से आए एक हज़ार प्रोफ़ेसरों व विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। बाबा जी ने उन्हें नामसंकीर्तन सिखाया, प्रवचन दिया और सभी को ध्यान सिखाया। घण्टों तक चले इस कार्यक्रम के नियत समय पर हुए समापन के समय, कोई भी वहाँ से नहीं जाना चाहता था। उस सत्संग के एक प्रतिभागी ने बाद में बताया कि उस सत्संग के समापन पर भी सभी लोग अपने स्थान पर बैठे रहे, सभी अपने अन्तर में उमड़ते प्रेम व शक्ति में निमग्न थे। बड़ी करुणा से बाबा जी भी हॉल में रुके रहे और उन्होंने सभी को एक बार फिर संकीर्तन करवाया। फिर भी कोई वहाँ से जाना नहीं चाहता था। आख़िरकार, बाबा जी भजन गाने लगे—और इस प्रकार मीठे प्रेम के सागर में उस सत्संग का समापन हुआ।

पश्चिमी देशों की अपनी यात्रा में जो मूल सिखावनी बाबा जी लाए थे और जिसे उन्होंने अपने सभी प्रवचनों में प्रदान किया, वह थी :

आपका सम्मान करो।
आपको पूजो।
आपको ध्याओ।
आपका राम आपमें आप जैसा होकर रहता है।

इतना ही नहीं, बाबा जी में इस सिखावनी का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने की दुर्लभ सामर्थ्य थी। मॅनहॅटन में हुए एक सत्संग में, एक व्यक्ति को दृष्टान्त हुआ कि बाबा जी एक तेजोमय नील ज्योति बन गए हैं जिसमें से प्रकाश-किरणें प्रसरित होकर, वहाँ मौजूद सभी के हृदय में प्रवेश कर रही हैं। बाबा जी का प्रकाश जब इस व्यक्ति के हृदय में प्रविष्ट हुआ तो उसे अनुभव हुआ कि उसका बोध अन्तर में गहरे खिंचता जा रहा है; उसका बोध अन्तर में विलीन हुआ और उसे परम आनन्द की अनुभूति होने लगी। बाबा जी के साथ सत्संग में भाग लेने आए अन्य अनेक लोगों की ही तरह, इस व्यक्ति को शक्तिपात दीक्षा का, गुरुकृपा से कुण्डलिनी शक्ति की जागृति का अनुभव हुआ था।

बाबा जी की पश्चिमी देशों की यात्रा से पूर्व, वहाँ के बहुत कम लोगों ने शक्तिपात दीक्षा के बारे में सुना था। भारत में, युगों से कुण्डलिनी-जागृति विषयक विज्ञान को गुप्त रखा गया था और इसे ऐसे

कुछ ही योगियों को उपलब्ध कराया जाता जिन्होंने कठोर तपस्या की हो। २९ नवम्बर, सन् १९७० को जब बाबा जी भारत लौटे, तब तक उनकी कृपा से, पश्चिमी देशों के अनेकानेक जिज्ञासुओं को शक्तिपात व कुण्डलिनी जागरण का अनुभव हो चुका था। बाबा जी की प्रथम विश्वयात्रा की यह एक महान उपलब्धि थी।

बाबा जी के गुरुदेव सिद्धपीठ लौटने के बाद, पश्चिम के जिन लोगों को उनका अनुग्रह प्राप्त हुआ था, जिन्होंने बाबा जी के दर्शन किए थे व सत्संग में भाग लिया था, वे सिद्धयोग की सिखावनियों की अनुभूति गहराई से करने के लिए गुरुदेव सिद्धपीठ आने लगे। अनेक लोग अपने-अपने घरों में या छोटे समूहों एकत्र होकर सिद्धयोग ध्यान का अभ्यास करने लगे। कालान्तर में, बाबा जी के आशीर्वाद से, उनमें से अनेक लोगों ने सिद्धयोग ध्यान-केन्द्रों की स्थापना की जहाँ लोग एक-साथ सत्संग में भाग ले सकें और नए साधक सिद्धयोग पथ के बारे में जान सकें।

अब, वर्ष २०२० में पीछे मुड़कर देखने पर, हम बाबा जी की प्रथम विश्वयात्रा का महत्त्व जान पा रहे हैं, जिससे सिद्धयोग पथ एक सार्वभौमिक आध्यात्मिक पथ के रूप में प्रतिष्ठित हुआ, एक ऐसे पथ के रूप में जो विश्वभर के जिज्ञासुओं के लिए खुला है। अतः, बाबा जी की प्रथम विश्वयात्रा की स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर हम उन आशीषों का उत्सव मना रहे हैं जो १९७० के उन कृपापूरित १०१ दिनों से एक अखण्ड धारा के रूप में निरन्तर प्रवाहित हो रहे हैं।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।